महाविनाश की संभावनाओं के बीच अपनी सलामती तथा सदगति के लिए क्या करें?

सर्जन, अवनति, विसर्जन और फिर नवसर्जन, यह प्रकृति का अथवा इस विश्वनाटक का एक बुनियादी सिद्धांत है |सब कुछ परिवर्तनशील है और यह सब परिवर्तन चक्रीय हैं| यह सब परिवर्तन श्रेष्ठ से कनिष्ठ, व्यवस्थित से अव्यवस्थित तथा नए से पुराने की तरफ गतिमान होते है। अर्थात कोई भी नई चीज, व्यक्ति या परिस्थिति समय के प्रवाह के साथ नई नहीं रहती है| इस सिद्धांत को आधुनिक विज्ञान भी समर्थन देता है| भौतिक विज्ञान (Physics) में थर्मोडायनामिक्स का दूसरा सिद्धांत (Second Law of Thermodynamics) कहता है कि 'Entropy of a system always increases' अर्थात किसी भी प्रणाली की अव्यवस्था में हमेशा वृद्धि ही होती हैं|

इस सिद्धांत को यदि हम इस धरती पर पुरुष, प्रकृति और परमात्मा के बिच खेले जा रहे इस विशाल विश्वनाटक के संदर्भ में देखें तो वहाँ भी इस विश्वनाटक की शुरुआत एक श्रेष्ठ युग से होती है, जिसका उल्लेख इतिहास में सतयुग या स्वर्ण युग के रूप में किया गया है| लेकिन उसके बाद सतयुग का, समय बितने पर, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग में परिवर्तित हो जाता है | सतयुग का समय कितना श्रेष्ठ और समृद्ध था, उसका वर्णन भी हम अनेक धर्मग्रंथों तथा विश्व की पुरातन संस्कृतियों में देखते हैं | उस समय लोग कितने मूल्यनिष्ठ तथा गुण, शक्ति और दिव्यता से संपन्न थे, उसके उल्लेख से भी हम परिचित है| परन्तु प्रकृति के उपरोक्त सिद्धांत के अनुसार धीरे धीरे अवनति होने से आज हम निश्चित रूप से विसर्जन के किनारे आकर खड़े हैं | सृष्टि चक्र में इस समय का उल्लेख भी महाविनाश या क़यामत के समय के रूप में किया गया है | और वहां इस समय के चिन्हों का जो वर्णन किया गया है, उससे भी ज्यादा कनिष्ठ परिस्थिति आज हम देख रहे है और अनुभव भी कर रहे है| वैज्ञानिक, भविष्यवेत्ताएं, इतिहासकार, तत्वचिंतक और धर्म-धुरंधर भी इस समय को एक महाविनाश या विसर्जन के समय के रूप में देख रहे हैं| नोस्ट्राडेमस, प्रो.हरार, जीन डिकशन, बाबा वांगा, एडगर केइसी, जैसे अनेक भविष्यवेत्ताओं ने भी इस समय का विकराल महाविनाश के समय के रूप में वर्णन किया है |

वैज्ञानिक चेपल स्पष्ट रूप से मानते हैं कि भले विज्ञानं द्वारा विश्व में विकास हुआ है, और लोगो की भौतिक सुविधाओं में भी वृद्धि हुई है, लेकिन सलामती के बहाने

तथा अस्वस्थ गलाकाट स्पर्धा के कारण और राजनेताओं के सत्ताभोग के कारण जो विनाशक तथा घातक शस्त्र-सरंजाम तैयार किए गऐ हैं, उसने विश्व की परिस्थिति को बहुत ज्यादा स्फोटक बना दिया है| न्युकलीयर, बायोलोजिक तथा केमिकल शस्त्र, मिसाईल्स और स्टारवोर्स के क्षेत्र में इतने हद तक विकास हुआ है कि दो विश्वयुद्ध के बाद अब तीसरा युद्ध होगा तो वह विश्व के लिए अंतिम होगा | किसी आतंकी संगठन, किसी दुष्ट तानाशाह या किसी वैज्ञानिक द्वारा इरादापूर्वक या दुर्घटना के कारण इन शस्त्रों का उपयोग होगा, तो मानव-निर्मित इस प्रलय को कोई रोक नहीं सकेगा | 1945 में जापान पर फेंके गए अणुबोम्ब के द्वारा जो विनाश हुआ था, उसके बाद वैज्ञानिकों के एक संगठन को डूम्स-डे क्लोक (Dooms-Day Clock) अर्थात एक सांकेतिक घड़ी बनानेका विचार आया, जो पृथ्वी का विनाश कितना नजदीक है, उसका समय बताता है| वह डूम्स-डे क्लोक भी अब महाविनाश की यह अंतिम घड़ियाँ हैं ऐसा बता रहा है|

परन्तु भयभीत या निराश होने की जरुरत नहीं है | सृष्टिचक्र के सिद्धांत के अनुसार विसर्जन के बाद नवसर्जन भी निश्चित है | परन्तु यह नवसर्जन किस तरह से संभव है, यह जानने के लिए हमें हमारी महान विरासत समान आध्यात्मिक ज्ञान तथा योग विज्ञान की सच्ची समझ प्राप्त करनी होगी| इस ज्ञान से तथा उसके अभ्यास से न सिर्फ हम सलामत और निर्भय रहेंगे, लेकिन हम विश्व के नवसर्जन में भी भागीदार बनेंगे|

हमारा आध्यात्मिक ज्ञान स्पष्ट रूप से कहता है कि पांच निर्जीव तत्वों से बने मेरे इस शरीर से भिन्न मैं स्वयं एक अजर, अमर, अविनाशी आत्मा हूँ| मेरा स्वरूप अति सूक्ष्म ज्योति बिन्दु है| सृष्टि रंगमंच पर मेरा पार्ट बजाने के लिए मेरा यह शरीर एक साधन मात्र है या वस्त्र मात्र है| सतयुग और त्रेतायुग के दौरान मुझे यह आत्मा की स्मृति पक्की थी| उसके कारण मैं संपूर्ण रीती से आत्म अभिमानी था| देह में होते हुए भी देहभान से मुक्त था| इसके कारण मेरा जीवन विकारों से मुक्त तथा विकार्मो से भी मुक्त था, और इसलिए मेरा जीवन सुख-शांति-समृद्धि तथा दिव्यगुणों और दिव्यशक्तियों से संपन्न था| लेकिन समय बीतने पर तथा अनेक जन्म लेते-लेते मैंने अपनी आत्मिक स्मृति को खो दिया और द्वापरयुग में मैं देहभान में आ गया | इस देहभान के कारण अनेक विषय-विकारों से मैं ग्रस्त हो गया और उसके प्रभाव के कारण जाने-अनजाने में अनेक विकर्म कर बैठा और पावन से पतित बन गया| आज यही मेरे दु:ख, अशांति, रोग,शोक तथा पीड़ा के कारण बने हैं| अनेक समस्याओं से भरी विश्व की आज की जो स्फोटक परिस्थिति है, उसके मूल में मनुष्य आत्माओं की तमोप्रधानता है | ऐसे समय में मैं कितना सलामत हूँ? मेरी भविष्य की गति कैसी होगी? मैं आनेवाले कष्टों के अनुभव से कितना दूर या मुक्त रह सकुंगा? इसका आधार मेरी आत्मा की अवस्था पर निर्भर होगा, इसलिए हमें ऐसी महाविनाश की संभावनाओं के बिच क्या करना चाहिए?

यह बात भले निश्चित हो कि मेरा यह पांच तत्वों से बना शरीर विनाश काल में नष्ट होगा, परन्तु मुझ आत्मा की आगे की यात्रा चालु रहनेवाली है, यह भी उतना ही निश्चित है, इसलिए अब यदि हम अपनी आत्मा की सदगति और सलामती चाहते हैं

और दु:ख, अशांति रोग, शोक की अनुभूति से मुक्त रहना चाहते हैं और अपनी आत्मा को पावन बनाना चाहते हैं, तो हमें देहभान से मुक्त होकर तथा विषय-विकारो के प्रभावों से मुक्त होकर आत्मचिंतन-आत्मदर्शन करके आत्मा की स्वस्मृति में या स्वस्थिति में स्थित होना पड़ेगा और भारतीय संस्कृति की विरासत समान राजयोग के नियमित अभ्यास द्वारा आत्मा का परमात्मा के साथ अनुसंधान प्रस्थापित करके आत्मा को ज्ञान, पवित्रता, सुख, शांति, आनंद, प्रेम, शक्ति से संपन्न बनाना होगा और योगाभ्यास द्वारा हमें अपने विकार्मो का विनाश करना होगा| इस विधि द्वारा आत्मा का इतनी हद तक सशक्तिकरण होगा कि महाविनाश के समय लोग 'हाय-हाय' करते होंगे और हम नवसर्जन की तैयारी के भागरूप 'वाह-वाह' करते होंगे और सदगति को प्राप्त होंगे | अंतिम समय की धर्मराज की सजाओं से भी मुक्त रहेंगे | तो आइए हम राजयोग सीखें और उसका अभ्यास करे|

.....o.....o.....

बी.के.प्रफुलचंद्र

सानडिएगो ; यु एस ए

(M) +91 98258 92710